बाल महाभारत
कक्षा-7 विषय-हिंदी
पाठ– 25 मंत्रणा

(घनश्याम मीना)

सार

- तेरहवाँ वर्ष पूरा होने के बाद पांडव विराट के राज्य में ही 'उपप्लव्य' नामक नगर में रहने लगे थे आगे के कार्यक्रम तय करने के लिए पांडवों ने अपने संबंधियों एवं मित्रों को बुलाने के लिए दूत भेजे। बलराम, सुभद्रा और अभिमन्यु सहित श्रीकृष्ण उपप्लव्य पहुँच गए। दो अक्षौहिणी सेना सहित काशिराज और वीर शैव्य तथा तीन अक्षौहिणी सेना सहित द्रुपद आ गए। द्रुपद के साथ उनके पुत्र शिखंडी व धृष्टद्युमन भी थे| अनेक राजा सेना सहित पांडवों के पक्ष में आए |

- सबसे पहले अभिमन्यु के साथ उत्तरा का विवाह किया गया इसके बाद विराट राज की सभा में सभी नरेशों ने मंत्रणा को। श्रीकृष्ण ने पांडवों के अधिकार की बात रखी। युद्ध से बचने की बात कही और एक दूत दुर्योधन को समझाने के लिए भेजने का प्रस्ताव किया। बलराम ने श्रीकृष्ण की बात का समर्थन किया किंतु उनके कथन में ध्वनि यह थी कि जुआ खेलने में दोष युधिष्ठिर का था। सात्यकि ने बलराम का विरोध किया और द्रुपद ने सात्यकि का समर्थन किया |

सार

- श्रीकृष्ण ने बात को निपटाने की दृष्टि से कहा कि हम पर कौरव-पांडवों का समान हक है। हम यहाँ किसी के पक्ष नहीं आए हैं। हम तो अभिमन्यु व उत्तरा के विवाह में सम्मिलित होने आए थे। अब वापिस चले जाएंगे अतः अब राजा द्रुपद दूत को समझा-बुझाकर दुर्योधन के पास भेज दें। दुर्योधन संधि को तैयार न हो, तो सब लोग युद्ध की तैयारी करें और हमें भी सूचित कर दें।

- यह कहकर श्रीकृष्ण द्वारका लौट गए। युधिष्ठिर युद्ध की तैयारी में लग गए। पांडव पक्ष के लोग अपनी-अपनी सेना तैयार करने लगे। दुर्योधन ने भी अपने मित्रों को संदेश भेज दिए। श्रीकृष्ण के पास दुर्योधन स्वयं पहुँचा। उसी समय अर्जुन भी द्वारका पहुँचा। श्रीकृष्ण के भवन में दोनों ने साथ-साथ प्रवेश किया। दोनों संबंधी होने के कारण श्रीकृष्ण के शयनागार में पहुंच गए। दुर्योधन श्रीकृष्ण के सिरहाने बैठ गया और अर्जुन पैरों के पास हाथ जोड़कर खड़ा हो गया। श्रीकृष्ण जागे तो उठकर अर्जुन का स्वागत किया और कुशल-क्षेम पूछी। घूमकर देखा तो दुर्योधन पर निगाह पड़ी। दोनों से आने का कारण पूछा।

सार

- दुर्योधन पहले बोला। उसने कहा-"हमारे व पांडवों के बीच युद्ध होने वाला है। मैं आपकी सहायता मांगने आया हूँ। पहले मैं आया हूँ अतः पहला हक मेरा है।"

- श्रीकृष्ण ने कहा "राजन्! आप भले ही पहले आए हैं किंत मेंन पहले अर्जुन को देखा है। मेरे लिए दोनों बराबर हैं। अर्जुनआपसे छोटा भी है। अतः पहला हक उसी का है।" अर्जुन की तरफ़ मुड़कर श्रीकृष्ण बोले-"पार्थ। सुनो! मेरे वंश के लोग नारायण कहलाते हैं। वे बड़े साहसी और वीर भी हैं। उनकी एक भारी सेना इकट्ठी की जा सकती है। मेरी यह सेना एक तरफ़ होगी। दूसरी तरफ़ अकेला मैं रहूँगा। मेरी प्रतिज्ञा यह भी है कि युद्ध में मैं न तो हथियार उठाऊँगा और न ही लड़ंगा। तुम भली-भांति सोच लो, तब निर्णय करो। इन दो में से जो पसंद हो वो ले लो |

सार

- बिना किसी हिचकिचाहट के अर्जुन बोला-'"आप शस्त्र उठाएं या न उठाएँ, आप चाहे लड़ें या न लड़ें, मैं तो आपको ही चाहता हूँ।" दुर्योधन बहुत खुश हुआ और वह बलराम जी के पास पहुंचा। बलराम जी ने कहा "मैं युद्ध में तटस्थ रहूँगा क्योंकि जिधर कृष्ण न हो, उस तरफ मेरा रहना ठीक नहीं है। अर्जुन की सहायता मैं करूँगा नहीं। अतः तुम्हारी भी सहायता नहीं कर सकता।

- दुर्योधन प्रसन्न होता हस्तिनापुर लौट गया। श्रीकृष्ण ने अर्जुन से पूछा-"सखा अर्जुन! एक बात बताओ। तुमने सेना-बल के बजाय मुझ निःशस्त्र को क्यों पसंद किया?" अर्जुन बोला-"बात यह है कि आप में वह शक्ति है कि जिससे आप अकेले ही इन तमाम राजाओं से लड़कर इन्हें कुचल सकते हैं।" अर्जुन की बात सुनकर कृष्ण मुसकराए और बोले-" अच्छा, यह बात है!" और अर्जुन को बड़े प्रेम से विदा किया। इस प्रकार श्रीकृष्ण अर्जुन के सारथि बने और पार्थ-सारथि की पदवी प्राप्त की |

सार

- मद्र देश के राजा शल्य नकुल-सहदेव के मामा थे। वे एक बड़ी सेना लेकर अपने भानजों की सहायता के लिए चले। जब दुर्योधन को पता चला कि राजा शल्य विशाल सेना के साथ आ रहे हैं तो उसने अपने कर्मचारियों को आदेश दिया कि यह सेना जहाँ डेरा डाले, वहाँ सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाए। शल्य यह सेवा पांडवों की समझते रहे किंतु भेद खुलने पर शल्य नैतिक रूप से दुर्योधन का साथ देने को बाध्य हो गए।

- शल्य ने युधिष्ठिर को बताया कि दुर्योधन ने धोखा देकर मुझे अपने पक्ष में कर लिया है। युधिष्ठिर बोला- "मामा जी! मौका आने पर निश्चय ही महाबली कर्ण आपको अपना सारथि बनाकर अर्जुन का वध करने का प्रयत्न करेगा मैं यह जानना चाहता हूँ कि उस समय आप अर्जुन की मृत्यु का कारण बनेंगे या अर्जुन की रक्षा का प्रयत्न करेंगे?“

- मद्रराज ने कहा-”बेटा युधिष्ठिर, मैं धोखे में आकर दुर्योधन को वचन दे बैठा। इसलिए युद्ध तो मैं उसकी ओर से ही करना होगा। पर एक बात बताए देता हूँ कि कर्ण मुझे सारथि बनाएगा, तो अर्जुन के प्राणों की रक्षा ही होगी।"

- उपप्लव्य में महाराज युधिष्ठिर और द्रौपदी को मद्रराज शल्य ने दिलासा दिया और कहा - "जीत उन्हीं की होती है, जो धीरज से काम लेते हैं। युधिष्ठिर! कर्ण और दुर्योधन की बुद्धि फिर गई है अपनी दुष्टता के फलस्वरूप निश्चय ही उनका सर्वनाश होकर रहेगा।“